आओ वार्तालाप करें

- लता जी के गाए हुए अपने मनपसंद गीतों के बारे में बताइए। अपना सबसे

(Critical Thinking)

विचार (Thought)

"साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात पशु के समान है।"

- उपर्युक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

जीवन-कौशल (Life Skills)

(Speaking Skills-Conversation)

बातों-बातों में

ने सीखा कि पौधे भी संगीत सुन सकते हैं।

त में क्या महत्व है? बताइए।

ों को लता जी के संगीत तथा जीवन में संगीत आदि के महत्व के बारे में बताइए।

5

गुरु महाराज का आगमन

(हास्य कथा)

प्रतिध्वनि

"दूसरों के दुख पर अपनी खुशी का निर्माण करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।" – महात्मा बुद्ध

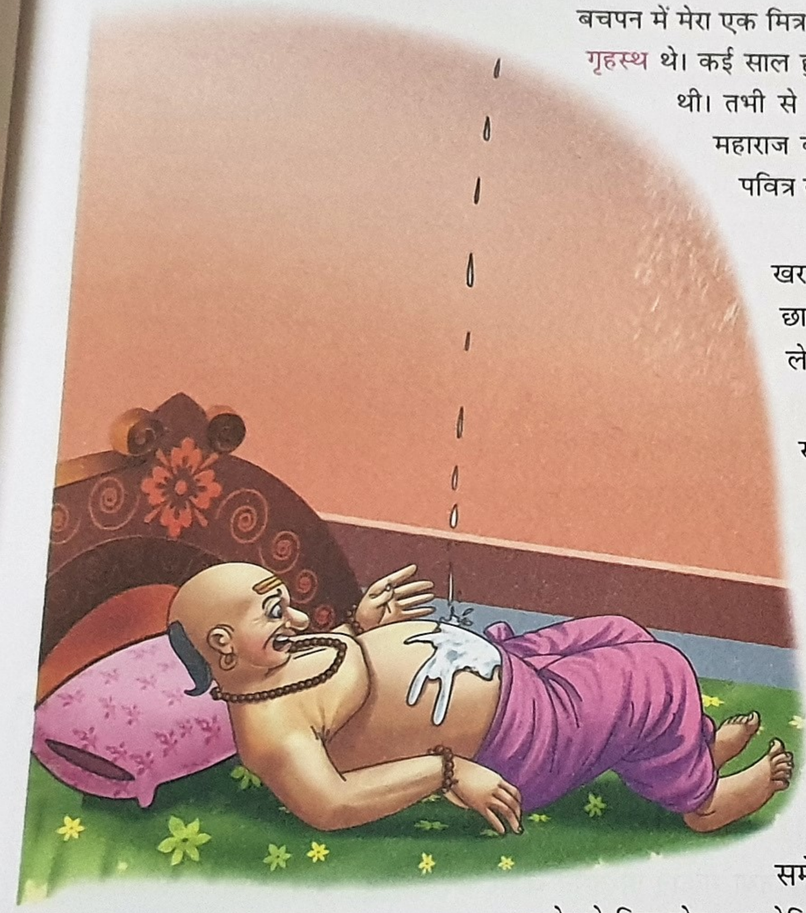

बचपन में मेरा एक मित्र था, उसका नाम था - लल्लू। लल्लू के पिता धनी गृहस्थ थे। कई साल हुए, पुराना घर तुड़वाकर तिमंजिला इमारत बनवाई थी। तभी से लल्लू की माँ की बड़ी इच्छा थी कि अपने गुरु महाराज को उसमें लाकर उनके चरणों की रज से घर को पवित्र करें।

कुछ दिन बाद गुरु महाराज आ गए, लेकिन कैसा खराब दिन था– आकाश में काले बादलों की घटा छाई हुई थी। आँधी और पानी थमने का नाम ही नहीं लेते थे।

बातचीत में रात हो गई, राह के थके हुए गुरुदेव खा-पीकर पलंग पर जाकर लेट गए। बढ़िया पलंग और गुलगुले बिछौने पर लेटकर प्रसन्नचित्त गुरु जी ने मन-ही-मन लल्लू की माँ नंदरानी को अनेक आशीर्वाद दिए लेकिन आधी रात में अकस्मात उनकी नींद उचट गई । छत से पानी टपक रहा था, उनकी तोंद पर टप-टप हो रही थी। ओह! वह पानी कितना ठंडा था! हड़बड़ाकर वह पलंग से उठ पड़े।

निवाड़ का पलंग भारी नहीं था। मसहरी समेत उसे गुरु जी दूसरे कोने में खींच ले गए और चुपके से फिर लेट गए लेकिन एक मिनट भी नहीं बीतने पाया था कि फिर वैसे ही दो-चार बूँद ठंडा पानी टप-टप पेट पर टपका। गुरु महाराज फिर उठ बैठे। फिर पलंग को खींचकर दूसरे किनारे पर ले गए। फिर लेटे, पर पेट के ऊपर पानी का टपकना जारी रहा। इस बार पलंग को खींचकर चौथे कोने में ले गए लेकिन वहाँ भी वही हाल हुआ। इस बार टटोलकर देखा, बिछौना भी भीग गया है। सोने का उपाय नहीं है।

डरते हुए गुरु महाराज बरामदे में आए। वहाँ एक लालटेन जल रही थी, किंतु आदमी कोई न था। एक तरफ एक बेंच पड़ी हुई थी। लाचार होकर गुरु जी उसी पर जा बैठे। आधी धोती खोलकर उन्होंने देह को अच्छी तरह ढक लिया।

इसी समय एकाएक एक नया उपद्रव उठ खड़ा हुआ। बड़े-बड़े मच्छरों ने जाने कहाँ से आकर उनके कानों के पास भिनभिनाना शुरू कर दिया। मच्छरों के काटने से जलन-सी होने लगी। गुरु जी तेज़ी से उठकर वहाँ से भागे लेकिन मच्छरों ने पीछा नहीं छोड़ा। गुरु जी बार-बार लगातार इधर-उधर हाथ-पाँव मारते थे, अँगोछा फटकारकर मच्छरों को भगाते थे लेकिन किसी तरह उनके धावे को रोक न पाते थे। गुरु जी की इस गोलाबारी से अगर दो-चार मच्छर शहीद हो जाते थे, तो उनकी जगह लेने के लिए नई कुमक आ जाती थी- दुगने उत्साह से मच्छरों की फौज हमला कर देती थी। गुरु जी बरामदे में इस सिरे से उस सिरे तक भागने लगे और इस जाड़े की ऋतु में भी उनकी देह से पसीना छूटने लगा।

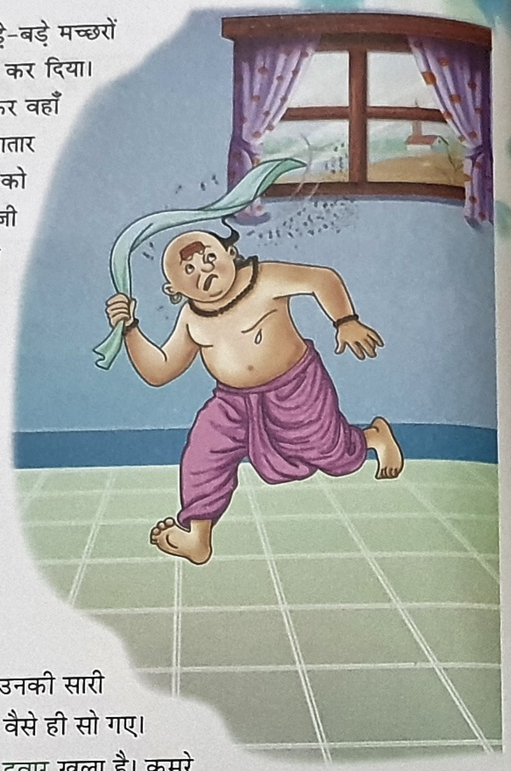

कहीं की घड़ी में टन-टन करके चार बजे। गुरु जी ने खीझकर मच्छरों से कहा- "काटो, जी भरकर काटो। अब मेरे हाथ-पाँव नहीं चलते।" इतना कहकर वे दीवार का सहारा लेकर ज़मीन पर बैठ गए। बोले- "सुबह तक अगर जीवित रहा तो इस अभागे शहर में फिर नहीं आऊँगा। सुबह जो गाड़ी मिलेगी, उसी से अपने घर भाग जाऊँगा।"

देखते-ही-देखते सभी कष्टों को मिटाने वाली नींद ने आकर उनकी सारी रात की सब तकलीफ़ दूर कर दी। गुरु महाराज अचेत-से होकर वहीं वैसे ही सो गए।

सुबह नंदरानी नीचे उतरकर आईं। देखा, गुरु जी के कमरे का द्वार खुला है। कमरे के भीतर झाँककर देखा, गुरु जी भीतर नहीं हैं लेकिन यह क्या मामला है! रात में पलंग दक्खिन की ओर बिछा था, अब उत्तर की ओर चला गया है।

बाहर निकलकर नौकरों को पुकारा। लेकिन व्यर्थ, अभी कोई उठा ही नहीं था। गुरु जी कहाँ गए ? एकाएक उनकी नजर एक तरफ गई, तो वे आश्चर्य से कह उठीं-''यह क्या है ?'' एक कोने में, जहाँ कुछ अँधेरा-सा जान पड़ा। हिम्मत करके नंदरानी आगे बढ़ीं। पास जाकर झुककर देखा- यह तो गुरु जी हैं! आशंका से वह चिल्ला उठीं- ''गुरु जी! ओ गुरु जी?''

गुरु महाराज उठकर खड़े हो गए। बोले, "रातभर कितना कष्ट मिला, क्या बताऊँ बेटी!"

नंदरानी ने घबराकर पूछा, "क्या हुआ, गुरु जी?"

गुरु महाराज ने कुछ रुआँसे-से होकर कहा, ''नया मकान तो तुमने जरूर बनवाया है, बेटी! लेकिन उसकी छत सब जगह से चलनी हो रही है। रातभर जो पानी बरसा, वह बाहर नहीं गया। सारा मेरी देह के ऊपर ही गिरता रहा। खाट खींचकर जिधर भी ले गया, वहीं पानी टपका। छत फटकर कहीं मेरे ऊपर ही न गिर पड़े, इस आशंका से मैं बाहर भागा लेकिन इससे भी जान नहीं बची ...''

बड़ी कोशिश और अनुनय-विनय से घर में लाए गए गुरु जी की करुण कहानी सुनकर और उनकी बुरी दशा अपनी आँखों से देखकर नंदरानी की आँखें भर आईं। उसने कहा, ''लेकिन गुरु जी, घर तो यह तिमंजिला बना है। आपके कमरे के ऊपर खुली छत नहीं है और भी कमरे हैं। वर्षा का पानी तीन-तीन छतों को तोड़कर आपके ऊपर कैसे गिर सकता है!''

कहते-कहते एकाएक उन्हें खयाल आया कि शायद यह शैतान लल्लू की कोई कारस्तानी होगी। वह दौड़कर कमरे के भीतर गईं। बिछौना टटोलकर देखा, बिछी हुई चादर बीच में से बिल्कुल भीग गई थी। ऊपर नज़र डाली तो देखा-मसहरी से अब भी बूँद-बूँद करके पानी टपक रहा है।

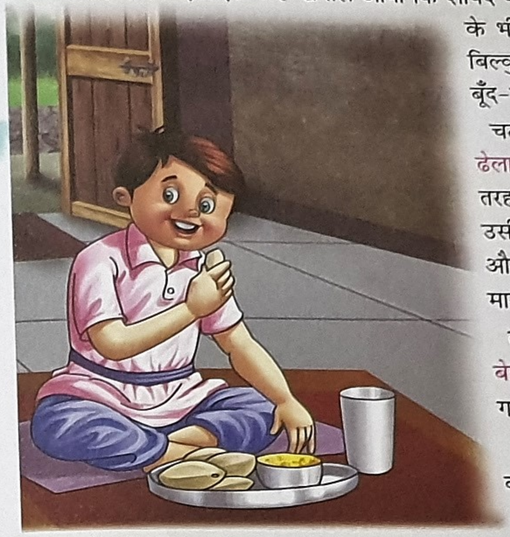

चटपट मसहरी उतारी तो दिख पड़ा- कपड़े में बँधा बर्फ का एक ढेला उस समय भी मौजूद था। नंदरानी सब समझ गईं। पागल की तरह झपटकर वह बाहर निकलीं और जो भी नौकर सामने पड़ा, उसी को चिल्लाकर आदेश दिया, ''देखो, दुष्ट कहाँ गया! तुम लोग और काम छोड़ो, जाकर उस बदमाश को जहाँ भी पाओ, वहीं से मारते-मारते घसीटकर लाओ।''

लल्लू के पिता उसी समय ऊपर से नीचे आ रहे थे। पत्नी का बेतहाशा बिगड़ना और चिल्लाना देख-सुनकर वह भौंचक्के-से हो गए, बोले, ''क्या हुआ ? क्यों चिल्ला रही हो?''

नंदरानी रो पड़ीं, बोली, ''बिना किसी कारण के उसने गुरुदेव की क्या दशा की है, ज़रा चलकर देख लो।''

तब सब लोग कमरे के भीतर गए। लल्लू की करतूत सब समझ गए। गुरु जी अपनी मूर्खता पर 'हो-हो' कर हँसने लगे।

नौकरों ने आकर कहा, ''लल्लू बाबू कोठी में नहीं हैं।'' और एक नौकर ने आकर खबर दी कि वह मौसी के घर में बैठे पेट-पूजा कर रहे हैं।

इसके बाद लगभग पंद्रह दिनों तक लल्लू ने अपने घर की चौखट पर पैर नहीं रखा।

-शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

जीवन मूल्य : हमें दूसरों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

शब्दार्थ

गृहस्थ	–	घर-परिवार वाला	रज	–	धूल
मसहरी	–	मच्छरदानी	अकस्मात	–	अचानक
उपद्रव	–	उत्पात, झमेला	धावा	–	आक्रमण, हमला
अनुनय-विनय	–	प्रार्थना, विनती	आशंका	–	डर, भय
ढेला	–	टुकड़ा	करुण	–	दुखभरी
कारस्तानी	–	करतूत	बेतहाशा	–	बड़ी तेजी से, लगातार
कुमक	–	सहायता, मदद	तिर्मंजिला	–	तीन मंजिलों का (मकान)